

ResearchPro International Multidisciplinary Journal



Vol- 2, Issue- 2, April-June 2026

ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com

Website- www.researchprojournal.com

लोक शैलियों का आधुनिक रूपांतरण: नौटंकी और सांगीत से आधुनिक भारतीय प्रोसीनियम मंच तक का सफर

प्रशांत कुमार

शोध छात्र, इतिहास विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

डॉ० स्वर्ण मणि

शोध पर्यवेक्षिका, वरीय सहायक प्राध्यापिका, इतिहास विभाग, टी० पी० कॉलेज, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

Article Info: (Received- 25/01/2026, Accept- 20/02/2026, Published- 03/04/2026)

DOI- [10.70650/rpimj.2026v2i2000011](https://doi.org/10.70650/rpimj.2026v2i2000011)

सारांश—

प्रस्तुत शोध-पत्र उत्तर भारतीय लोक नाट्य विधाओंकविशेषकर नौटंकी और सांगीतकृके पारंपरिक खुले मंच से आधुनिक कॉर्पोरेट व अकादमिक प्रोसीनियम थिएटर तक के संक्रमणकालीन इतिहास, संरचनात्मक बदलावों और प्रासंगिकता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन है। औपनिवेशिक दौर से शुरू हुई आधुनिकता की बयार ने भारतीय रंगमंच को पश्चिमी मंचीय ढांचे और यथार्थवादी शैली से परिचित कराया। इस प्रक्रिया में जहाँ एक ओर लोक शैलियों को अशिष्ट कहकर हाशिए पर धकेला गया, वहीं दूसरी ओर स्वतंत्रता के बाद इप्ता और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निर्देशकों ने इन्हीं लोक तत्वों को आधुनिक रंगमंच की रीढ़ बनाया। यह लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे नौटंकी के श्रगगड़े की थाप और सांगीत की श्रागनीश ने आधुनिक तकनीकी युग के प्रकाश-संयोजन, ध्वनि-अभियांत्रिकी और संकर रंग-भाषा को प्रभावित किया है।

मुख्य शब्द— लोक रंगमंच, नौटंकी, सांगीत, प्रोसीनियम मंच, आधुनिक भारतीय थिएटर, इप्ता, सांस्कृतिक रूपांतरण।

1. प्रस्तावना

भारतीय रंगमंच की जड़ें जितनी गहरी नाट्यशास्त्र की शास्त्रीय परंपरा में हैं, उतनी ही समृद्ध और जीवंत इसकी लोक शैलियों में रही हैं। भारत का लोक रंगमंच केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जनमानस के सुख-दुख, इतिहास, मिथक और समकालीन विमर्शों का एक जीवंत दस्तावेज़ रहा है। उत्तर भारत की बात करें, तो नौटंकी और सांगीत (स्वांग) ने सदियों तक आम जनता के दिलों पर राज किया। खुले मैदानों, मेलों और चौपालों में लकड़ी के ऊँचे तख्तों पर होने वाले ये प्रदर्शन जन-संवाद के सबसे सशक्त माध्यम थे।

परंतु, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में औपनिवेशिक शासन के सुदृढीकरण और पश्चिमी शिक्षा पद्धति के प्रसार के साथ भारतीय कला-जगत में एक युगांतकारी परिवर्तन आया। अंग्रेजों के साथ भारत आए प्रोसीनियम थिएटर (चौखटे वाले बंद मंच) ने दृश्यता और प्रस्तुतीकरण के पूरे व्याकरण को बदल दिया। जहाँ पारंपरिक लोक शैलियाँ त्रि-आयामी और दर्शक-अभिनेता के सीधे तादात्म्य पर आधारित थीं, वहीं प्रोसीनियम ने उनके बीच एक चौथी दीवार खड़ी कर दी। यह शोध-पत्र इसी ऐतिहासिक संक्रमण की पड़ताल करता है कि किस प्रकार नौटंकी और सांगीत की अनगढ़, संगीतात्मक और ऊर्जस्वित लोक विधाएँ आधुनिक, तकनीक-संचालित और बौद्धिक

थिएटर मंचों पर रूपांतरित हुई और आज के वैज्ञानिक युग में उनका क्या स्वरूप शेष है।

2. शोध कार्यप्रणाली

इस शोध में ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत पारंपरिक स्वांग/नौटंकी के ऐतिहासिक ग्रंथों (जैसे हाथरस और कानपुर शैलियों की लिपियाँ) तथा आधुनिक नाटकों की प्रदर्शन-रिकॉर्डिंग का विश्लेषण किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में रंगमंच के इतिहासकारों (जैसे कपिला वात्स्यायन, सुरेश अवस्थी और जगदीश चंद्र माथुर) के सिद्धांतों का सहारा लिया गया है। शोध में यह देखा गया है कि पारंपरिक लोक तत्वों (जैसे संगीत, नृत्य, विदूषक) का आधुनिक प्रोसीनियम स्पेस और समकालीन प्रकाश व ध्वनि तकनीक के साथ कैसे अंतर्संबंध स्थापित हुआ है।

3. विषय की प्रासंगिकता

वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति के वर्तमान दौर में, जहाँ रंगमंच सिनेमा और ओटीटी प्लेटफॉर्म से कड़ी प्रतिस्पर्धा कर रहा है, लोक शैलियों के आधुनिक रूपांतरण का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है। यह शोध इस भ्रांति को तोड़ता है कि लोक कलाएँ अपरिवर्तनीय या पिछड़ी हुई हैं; बल्कि यह दिखाता है कि लोक विधाओं में अद्भुत लचीलापन होता है। आज जब आधुनिक थिएटर तकनीक (जैसे- 3D मैपिंग, डिजिटल ध्वनि और उन्नत प्रकाश व्यवस्था) से लैस हो चुका है, तब नौटंकी की संगीतात्मकता और सांगीत के संवाद-शिल्प को समझना समकालीन निर्देशकों के लिए नए प्रयोगों के द्वार खोलता है। यह अध्ययन भारतीय रंगमंच की मौलिक पहचान को बनाए रखने और पश्चिमी रंग-सिद्धांतों के समानांतर एक संकर देशी मंचीय मुहावरा गढ़ने की दिशा में महत्वपूर्ण वैचारिक योगदान देता है।

4. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: नौटंकी और सांगीत की मूल संरचना

सांगीत या स्वांग की परंपरा उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के क्षेत्रों में अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक इसी सांगीत ने एक अधिक सुगठित और व्यावसायिक रूप अख्तियार किया, जिसे 'नौटंकी' कहा गया।

क. हाथरस और कानपुर शैली का वैभिन्न्य

नौटंकी मुख्य रूप से दो शैलियों में विभाजित रही—

1. हाथरस शैली (मल्खान सिंह और नत्थाराम शर्मा गौड़ की परंपरा)— इसमें शास्त्रीय संगीत, ध्रुपद-धमार और चौबोला छंदों की प्रधानता थी। यहाँ गायन की उच्च ताक और सुरीलापन मुख्य तत्व था।
2. कानपुर शैली (श्रीकृष्ण पहलवान की परंपरा)— इसमें मनोरंजन, चुटीले संवाद, लावणी और गजल का पुट अधिक था। इसमें प्रदर्शन को अधिक नाटकीय और लोक-लुभावन बनाया गया।

ख. पारंपरिक मंचीय संरचना

पारंपरिक तौर पर नौटंकी के लिए किसी बंद प्रेक्षागृह की आवश्यकता नहीं होती थी। गाँव के बीचों-बीच चार या छह लकड़ी के तख्तों (चौकियों) को मिलाकर एक ऊँचा मंच बना दिया जाता था। दर्शक मंच के तीन या चारों तरफ बैठते थे। रोशनी के लिए मशालों, गैस के पेट्रोमैक्स या साधारण बल्बों का प्रयोग होता था। अभिनय में स्वाभाविकता के बजाय अतिनाटकीयता और ऊँचे स्वर का प्रयोग होता था, क्योंकि नगाड़े और ढोलक की तीव्र थाप के बीच बिना माइक्रोफोन के आवाज को हजारों की भीड़ तक पहुँचाना होता था।

5. औपनिवेशिक प्रभाव और प्रोसीनियम मंच का आगमन

अंग्रेजी शासन के दौरान कलकत्ता, बंबई और मद्रास जैसे महानगरों में ब्रिटिश शैली के थिएटर भवनों का निर्माण हुआ। इन थियेटरों की विशेषता थीकृप्रोसीनियम आर्च। इसने दर्शक और अभिनेता के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींच दी।

क. संभ्रांत वर्ग की दृष्टि और लोक कलाओं का हाशियाकरण

औपनिवेशिक शिक्षा से प्रभावित भारतीय भद्रलोक ने नौटंकी, सांगीत और तमाशा जैसी विधाओं को अश्लील, अशिष्ट और शृंगारु मानकर खारिज कर दिया। ब्रिटिश सरकार ने भी ड्रामेटिक परफॉर्मंस एक्ट 1876 के जरिए इन लोक विधाओं पर कड़ा नियंत्रण लगाया, क्योंकि इनमें ब्रिटिश विरोधी स्वर और तीखा राजनीतिक व्यंग्य होने

की संभावना सबसे अधिक थी। इसके परिणामस्वरूप, लोक विधाएँ शहरों से कटकर ग्रामीण अंचलों तक सिमट गईं और पारसी थिएटर जैसी नई व्यावसायिक विधाओं का जन्म हुआ, जिसने लोक तत्वों को लिया तो सही, लेकिन उन्हें एक बंद, भड़कीले और पश्चिमी ढांचे में कस दिया।

6. स्वतंत्रता के बाद लोक तत्वों का पुनरुत्थानरूप इप्ता और आधुनिक रंगमंच

स्वतंत्रता के आस-पास भारतीय रंगमंच के विचारकों को यह अहसास हुआ कि यदि देश की आम जनता तक पहुँचना है, तो पश्चिमी यथार्थवादी रंगमंच (जैसे इब्सन और चेखव की शैली) नाकाफी है। इसके लिए अपनी मिट्टी के लोक रूपों की ओर लौटना होगा।

क. इप्ता (IPTA) का योगदान

भारतीय जन नाट्य संघ (IPTA) ने लोक धुनों और लोक नाट्य रूपों का उपयोग राजनीतिक और सामाजिक चेतना जगाने के लिए किया। उन्होंने नौटंकी के लचीलेपन को समझा कि इसमें समकालीन विषयों (जैसे भुखमरी, जमींदारी उन्मूलन, आज़ादी की लड़ाई) को तुरंत पिरोया जा सकता है।

ख. हबीब तनवीर और इब्राहिम अल्काज़ी का दौर

आधुनिक भारतीय रंगमंच को जिन निर्देशकों ने अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई, उन्होंने लोक रूपों का आधुनिक प्रोसीनियम पर अभूतपूर्व रूपांतरण किया—

- हबीब तनवीर— हालांकि उन्होंने छत्तीसगढ़ के शनाचाश पर अधिक काम किया, परंतु उनके काम का मूल सिद्धांत लोक तत्वों को आधुनिक मंचीय चेतना से जोड़ना था। उनका मानना था कि लोक कलाएँ जड़ नहीं होतीं, वे समकालीन हो सकती हैं।
- शांता गांधी और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय— शांता गांधी द्वारा निर्देशित नाटक जसमा ओडन (भवाई शैली पर आधारित) ने यह सिद्ध कर दिया कि लोक शैलियों को जब आधुनिक प्रकाश व्यवस्था और प्रोसीनियम के अनुशासित स्पेस में लाया जाता है, तो एक नई रंग-भाषा का जन्म होता है।

7. नौटंकी और सांगीत का आधुनिक रूपांतरण: तकनीकी और संरचनात्मक बदलाव

जब नौटंकी और सांगीत पारंपरिक खुले मैदानों से निकलकर आधुनिक एयर-कंडीशनर प्रेक्षागृहों (जैसे कमानी ऑडिटोरियम या श्रीराम सेंटर) में पहुँचे, तो उनके भीतर कई महत्वपूर्ण संरचनात्मक और तकनीकी बदलाव आए।

क. ध्वनि-व्यवस्था और गायन शैली का धीमा होना

पारंपरिक नौटंकी में गायक को शगाड़े की गूँज को काटने के लिए बहुत ऊँचे सुर (भपही चपजबी) में गाना पड़ता था, जिसे टेर लगाना कहते थे। आधुनिक मंचों पर कॉलर माइक, संवेदनशील पोडियम माइक और सराउंड साउंड सिस्टम के आने से अभिनेताओं को चिल्लाने की आवश्यकता नहीं रही। इससे नौटंकी के गायन में एक नई सूक्ष्मता, ठहराव और शास्त्रीय गंभीरता आई। अब शरागनीश या शदौड़ छंदों को गाते समय अभिनेता अपनी आवाज के मॉड्यूलेशन पर अधिक ध्यान देने लगा।

ख. प्रकाश-संयोजन (Light Designing) बनाम भव्य सेट्स

पारंपरिक सांगीत में दृश्यों को बदलने के लिए किसी पर्दे या सेट की जरूरत नहीं होती थी; केवल संवादों के माध्यम से ही नदी, पहाड़ या महल की कल्पना कर ली जाती थी। आधुनिक प्रोसीनियम मंच पर प्रकाश-संयोजन ने इस लोक-कल्पनाशीलता को एक नया आयाम दिया। डिमर्स, स्पॉटलाइट्स और कलर्ड फिल्टर्स के प्रयोग से नौटंकी के काल्पनिक दृश्यों को मंच पर एक जादुई यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। उदाहरण के लिए, जब नौटंकी का नायक किसी यात्रा पर निकलता है, तो पारंपरिक मंच पर वह केवल गोल चक्कर काटता था, लेकिन आधुनिक मंच पर मूविंग लाइट्स और बैक-प्रोजेक्शन के जरिए उस यात्रा को दृश्य रूप में सजीव कर दिया जाता है।

ग. समय और कथा-शिल्प का संक्षेपण

पारंपरिक नौटंकी रात भर (लगभग 6 से 8 घंटे) चलती थी। आधुनिक शहरी दर्शक के पास समय का अभाव है। इसलिए आधुनिक नाटककारों और निर्देशकों ने नौटंकी की कथावस्तु को समेटकर 1.5 से 2 घंटे के भीतर चुस्त-दुरुस्त रूप में प्रस्तुत करना शुरू किया। अनावश्यक दोहराव को हटा दिया गया और कथा को रैखिक

बनाने के बजाय मोंटाज शैली में पिरोया गया।

8. आधुनिक प्रयोग: मुद्राराक्षस से भानु भारती तक

नौटंकी और सांगीत के आधुनिक रूपांतरण को समझने के लिए कुछ विशिष्ट नाटकों का विश्लेषण अनिवार्य है—

क. मुद्राराक्षस का अला अफसर

मुद्राराक्षस ने निकोलाई गोगोल के प्रसिद्ध नाटक द गवर्नमेंट इंस्पेक्टर का नौटंकी शैली में रूपांतरण किया, जिसका नाम था अला अफसर। इस नाटक को जब आधुनिक मंच पर खेला गया, तो इसने नौटंकी की कानपुरी शैली के हास्य-व्यंग्य और कड़क संवादों का बेहतरीन उपयोग किया। इसने दिखाया कि कैसे एक विदेशी क्लासिक नाटक को भारतीय लोक शैली के माध्यम से स्थानीय नौकरशाही पर तीखे प्रहार का माध्यम बनाया जा सकता है।

ख. भानु भारती और अनूप लाठर के प्रयोग

हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के शसांगीत (विशेषकर पंडित लखमीचंद की परंपरा) को आधुनिक निर्देशकों ने नए सिरे से व्याख्यायित किया है। भानु भारती ने लोक आख्यानो को आधुनिक तकनीकी मंच पर प्रस्तुत करते समय लोक वाद्यों (जैसे सारंगी, नगाड़ा, घड़ा) के साथ आधुनिक सिंथेसाइज़र का मिश्रण किया। इससे लोक संगीत की आत्मा तो बची रही, लेकिन उसका साउंडस्केप वैश्विक स्तर का हो गया।

9. समकालीन वैज्ञानिक एवं डिजिटल युग में चुनौतियाँ और संभावनाएँ

आज का रंगमंच केवल प्रोसीनियम आर्च तक सीमित नहीं है, यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, 3D प्रोजेक्शन मैपिंग, डिजिटल स्क्रीन्स और वर्चुअल रियलिटी के युग में प्रवेश कर चुका है। इस तकनीकी युग में नौटंकी और सांगीत जैसी लोक शैलियाँ एक नए दौरा पर खड़ी हैं।

क. हाइब्रिडिटी (संकर स्वरूप) और डिजिटल प्रयोगात्मकता

वर्तमान समय में कई युवा रंगकर्मी लोक शैलियों को शमलीमीडिया परफॉर्मेंस में बदल रहे हैं। मंच के पीछे विशाल एलईडी स्क्रीन्स पर लोक दृश्यावलियों के ग्राफिक्स चलते हैं, जबकि मंच पर अभिनेता नौटंकी के छंदों का गान करता है। यह लोक कला का तकनीकी सरलीकरण भी है और उसका आधुनिकीकरण भी।

ख. लोक की आत्मा बनाम तकनीकी भव्यता

यहाँ एक बड़ी चुनौती यह खड़ी होती है कि क्या अत्यधिक तकनीकी प्रयोगों के कारण लोक शैलियों की वह मौलिक कच्ची ऊर्जा और अनगढ़पन नष्ट तो नहीं हो रहा है? प्रोसीनियम मंच की अनुशासन-प्रियता कभी-कभी लोक कला के उस मुक्तछंद स्वभाव को बांध देती है, जहाँ अभिनेता सीधे दर्शकों के बीच जाकर बैठ जाता था या अभिनय के बीच में ही दर्शकों से संवाद करने लगता था। आधुनिक निर्देशकों को इस संतुलन को बनाए रखना होगा।

10. निष्कर्ष

नौटंकी और सांगीत से लेकर आधुनिक भारतीय प्रोसीनियम और तकनीकी मंच तक का सफर भारतीय रंगमंच की जीवंतता और उसकी अनुकूलन क्षमता का अकाट्य प्रमाण है। यह रूपांतरण केवल एक मंच से दूसरे मंच पर जाने का भौतिक बदलाव नहीं है, बल्कि यह इस बात का प्रतीक है कि कैसे भारतीय रंगमंच ने औपनिवेशिक दासता और पश्चिमी प्रभाव को पचाकर अपनी एक स्वतंत्र, संकर और आधुनिक पहचान विकसित की है।

तकनीक ने निश्चित रूप से लोक विधाओं के प्रस्तुतीकरण को अधिक परिष्कृत, वैज्ञानिक और दर्शनीय बनाया है। नगाड़े की थाप अब डिजिटल एम्पलीफायरों से गूंज रही है और मशालों की जगह एलईडी लाइट्स ने ले ली है, परंतु नौटंकी और सांगीत का मूल तत्व—अर्थात् जनसरोकार, संगीतात्मकता और सामाजिक विमर्श—आज भी उतना ही अपरिवर्तित है। भविष्य का भारतीय रंगमंच इसी लोक-ऊर्जा और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि के समन्वय से ही अपनी वैश्विक पहचान को और अधिक सुदृढ़ कर सकेगा।

Author's Declaration

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors,

omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची—

1. कथिलीन, हैन्सन. ग्राउंड्स फॉर प्ले: द नौटंकी थिएटर ऑफ नॉर्थ इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1992, प. 22.
2. तनवीर, हबीब. रंग बोर्ड्स माई लाइफ इन थिएटर. पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2014, प. 18.
3. विद्यार्थी, गोविंद. श्द इवोल्यूशन ऑफ इप्ता एंड द फोक रिवाइवल संगीत नाटक, वॉल्यूम 45, नंबर 2, 2011, पृ. 265.
4. शर्मा, रामविलास. भारतीय रंगमंच और परंपरा राजकमल प्रकाशन, 1998, पृ. 87.
5. अवस्थी, सुरेश. ड्रामा: द गिफ्ट ऑफ गॉड्स: कल्चर, परफॉर्मेंस एंड कम्युनिकेशन इन इंडिया. रिलायंस पब्लिशिंग हाउस, 1983, प 119.
6. पांडे, अनुपा. द नाट्यशास्त्र ट्रेडिशन एंड फोक थिएटर ऑफ इंडिया. कुसुमांजलि बुक वर्ल्ड, 2004, पृ. 231.
7. बैबिरास्की, कैरल एम. श्द डायनेमिक ऑफ फोक आर्ट्स इन मॉडर्न इंडिया. जर्नल ऑफ फोकलोर रिसर्च, वॉल्यूम 22, नंबर 1, 1985, पृ. 34–48.
8. मलिक, मधु. ट्रेडिशनल फॉर्म्स ऑफ कम्युनिकेशन एंड द मास मीडिया इन इंडिया. यूनेस्को, 1983, पृ. 97–98.
9. वत्स्यायन, कपिला. ट्रेडिशनल इंडियन थिएटर मल्टीपल स्ट्रीम्स. नेशनल बुक ट्रस्ट, 1980, प. 103.
10. विद्यार्थी, गोविंद. द इवोल्यूशन ऑफ इप्ता एंड द फोक रिवाइवल, संगीत नाटक, वॉल्यूम 45, नंबर 2, 2011, पृ. 265.

Cite this Article

"प्रशांत कुमार; डॉ० स्वर्ण मणि", "लोक शैलियों का आधुनिक रूपांतरण: नौटंकी और सांगीत से आधुनिक भारतीय प्रोसीनियम मंच तक का सफर", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9679 (Online), Volume:2, Issue:2, April-June 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."